वात्सल्य और स्नेह

सूरदास

कवि परिचय :

सूरदास विट्ठलनाथ द्वारा स्थापित अष्टछाप के अग्रणी भक्त कवि हैं। सूरदास का जन्म संवत् 1535 (सन् 1478) में दिल्ली के पास सीही नामक गाँव में हुआ था। उनके सम्बन्ध में कहा जाता है कि वे जन्मान्ध थे।

सूरदास की सर्वसम्मत प्रामाणिक रचना `सूरसागर' है। `सूरसागर' के अतिरिक्त `साहित्य लहरी' भी उनकी प्रमाणिक रचना मानी जाती हैं।

सूरदास कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं। उन्होंने कृष्ण की बाल लीलाओं का विस्तृत वर्णन किया है। उनका हृदय गोप-बालकों की भाँति सरल और निष्पाप, ब्रज-गोपियों की भाँति सहज संवेदनशील, प्रेम प्रवण और माधुर्यपूर्ण, नन्द और यशोदा की भाँति सरल, विश्वासी, स्नेह कातर और आत्म बलिदान की भावना से ओतप्रोत है। राधा और गोपियों के प्रेम प्रसंग, रास लीला, मथुरा गमन, कंस वध, ब्रज विरह और उपालंभ इनके प्रमुख वर्ण्य विषय हैं। उनकी प्रेम भक्ति के सख्य, वात्सल्य और माधुर्य भावों का चित्रण जिन संचारी भावों में हुआ है, उनके अन्तराल में उनकी वैराग्यवृत्ति और दीनतापूर्ण आत्म निवेदनात्मक भक्ति भावना की अन्तर्धारा प्रवाहमान है।

उनकी ब्रजभाषा में साहित्यिक माधुर्य है। अलंकारों का सहज स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। करुण व हास का दुर्लभ एक रस रूप सूरकाव्य में सुलभ है। यही कारण है कि उनकी गोपियाँ विरह की हृदय-विदारक वेदना को भी हास-परिहास में दबा ले जाती है। वे मानवीय मनोभावों और चित्तवृत्तियों को लोकोत्तर स्वरूप प्रदान कर देते हैं और यही सूरकाव्य लोक और परलोक को एक साथ प्रतिबिंबित करता है।

सूरदास गीतिकाव्य परम्परा के सशक्त गीतकार हैं। अपनी काव्यकला और साहित्यिक प्रतिभा के बल पर वे हिन्दी साहित्य जगत के सूर्य माने जाते हैं।

कवि परिचय :

गोपालसिंह नेपाली

मंचों को राष्ट्रीय भावों के उद्घोष से गुंजायमान करने वाले गोपालसिंह नेपाली का जन्म बेतिया (बिहार) में 11 अगस्त सन् 1903 ई. को हुआ। इनके पिता रायबहादुर गोरखा रायफल में सैनिक थे। देश-प्रेम और मानवता की भावना इन्हें विरासत में प्राप्त थी। 14 वर्ष की आयु से ही वे कविता लिखने लगे थे। नेपाली ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन और कवि-सम्मेलनों में अपने गीतों से विशिष्ट पहचान बनाई।

नेपाली जी रतलाम टाइम्स (मालवा), चित्रपट (दिल्ली), सुधा (लखनऊ) और योगी (साप्ताहिक, पटना) के सम्पादन विभाग में रहे। चलचित्रों के गीतकार के रूप में भी आप प्रसिद्ध हुए। उन्होंने 50 से अधिक फिल्मों के गीत लिखे। 1962 के चीनी आक्रमण के समय उन्होंने देश में घूम-घूमकर गीतों का गायन किया और देशभक्ति की भावना जाग्रत की।

`उमंगें', `पंछी', `रागिनी', `नीलिमा', `पंचमी', `सावन', `कल्पना', `आँचल', `रिमझिम', `नवीन', `हिन्दुस्तान', `हिमालय पुकार रहा है' आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। इन रचनाओं में नेपाली जी प्रकृति के रम्य रूप और मनोहर छवियों को प्रस्तुत करते हैं जिसमें एक ओर प्रणय और सौन्दर्य प्रकट है तो दूसरी ओर राष्ट्र प्रेम उत्कट है। शोषित के प्रति सहानुभूति और स्थितियों से जूझने का सन्देश उनमें मुखर है। इनके प्रणय गीत माधुर्य से ओतप्रोत और प्रयाण-गीत ऊर्जावान हैं। भाई-बहन के प्रेम को आधार बनाकर भी उन्होंने काव्य रचना की है।

इनकी भाषा साहित्यिक के साथ-साथ व्यावहारिक है। यही कारण है कि वह जनसामान्य के निकट सरल सहज और संप्रेषणीय है। नेपाली जी की गणना विशिष्ट राष्ट्रीय कवियों में की जाती है। उन्होंने मानवीय रिश्तों की डोर को आधार मानकर भी काव्य रचना की है। गीतधारा को आगे बढ़ाने में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

केन्द्रीय भाव -

प्रेम के अनेक रूपों में से वात्सल्य प्रेम का वह प्रकार है जिससे प्रेम का निश्छल, उदार और शिशु सुलभ स्वभाव प्राप्त होता है। यह भाव शिशु के मोहक स्वरूप, उसकी आकर्षक मुद्राओं और उसके अबोध व्यवहारों के प्रदर्शन से दर्शक के हृदय में प्रस्फुटित होता है। मातृत्व परक स्नेह भाव की केन्द्रीयता वात्सल्य में प्रकट होती है। वात्सल्य का उद्रेक वत्सलता से ही फूटता है। वत्सलता के अंतर्गत बाल क्रीड़ा, बाल मनोविनोद और बाल कुतूहल जैसे भाव तो निहित हैं ही; इसमें बाल सुलभता के संरक्षण और उसके पोषण के भाव-संसार की व्यापकता भी समाहित है। यह भाव माता-पिता के आनंद का वर्द्धक है।

हिन्दी साहित्य में वात्सल्य केन्द्रित रचनाओं की स्वल्पता है, किन्तु जितनी भी रचनाएँ प्राप्त होती हैं, वे वत्सलता के प्रभावी स्वरूप को प्रस्तुत करती हैं। सूरदास ने शिशु सुलभ मुद्राओं, क्रीड़ाओं और भंगिमाओं को तो अपने काव्य में प्रस्तुत किया ही है- शिशु के स्वभावगत सौन्दर्य को भी उन्होंने अपनी उदात्त और आकर्षक छबियों में प्रकट किया है। उनके द्वारा वर्णित वत्सल मात्र भक्तिकाल की धरोहर नहीं है; वह शाश्वत भाव संपदा है। प्रस्तुत पदों में सूरदास ने शिशु कृष्ण की सहज भाव क्षमता का उद्घाटन किया है। शिशु असंभव को संभव करने की भी उतावली पालता है। वह सहज विश्वासी होता है। शिशु कृष्ण से यदि माँ ने कह दिया है कि गाय का दूध पीने से चोटी बढ़ती है तो शिशु कृष्ण खूब दूध पीते हैं और रोज-रोज माँ से पूछते हैं कि उसकी चोटी क्यों नहीं बढ़ रही है? शिशु की अधीरता का यह मनोहारी प्रसंग है। बच्चों में पारस्परिक चिढ़ाने का भाव रहता है। कृष्ण बलराम की शिकायत अपनी माँ से इसी रूप में करते हैं। बलराम उन्हें उलटा-सीधा कहकर चिढ़ाते रहते हैं। शिशु सुलभ स्वभाव में मिट्टी खाने की प्रवृत्ति भी समाहित है। सूरदास ने इस तथ्य का मनोरंजक वर्णन अपने पदों में किया है। सूरदास की भाषा का प्रवाह और उनकी चमत्कृत कर देने वाली शब्द संयोजना इन पदों में उपलब्ध होती है।

गोपाल सिंह नेपाली ने राष्ट्रीय चेतना के साथ-साथ मानवीय जीवन की ऊष्मापूर्ण अनुभूतियों का प्रभावशाली वर्णन अपनी कविताओं में किया है। प्रस्तुत कविता में कवि ने भाई-बहिन के बीच के प्रेम को राष्ट्रीय प्रेम के परिवेश में अभिव्यक्त किया है। इस कविता में भाई, बहिन को संबोधित कर रहा है। वह बहिन से कहता है कि हम दोनों को राष्ट्र रक्षा के निमित्त सजग और सक्रिय होना है। अनेक प्रतीकों के माध्यम से कवि ने अपने इस कथ्य को प्रकट किया है। बहिन की बुद्धि और भाई की क्रियाशीलता मिलकर ही जीवन को और राष्ट्र को आनंदमय बना सकेगी। दोनों मिलकर आजादी के गीत गाकर ही मातृभूमि के प्रति अपने कर्त्तव्य को पूर्ण कर सकते हैं। इस कविता में मनुष्य के संबंधों के भीतर के स्नेह-भाव को तो व्यक्त किया ही गया है- इसे मातृभूमि के प्रेम से जोड़कर और उदात्त बना दिया गया है। कविता में दिए गए बिम्ब और प्रतीक एकदम मौलिक और नवीन हैं।

सूर के बालकृष्ण

मैया मैं नाहीं दधि खायो।
ख्याल परे ये सखा सबै मिलि, मेरे मुख लपटायो।।
देखि तुही सींके पर भाजन, ऊँचे धर लटकायो।

तुही निरखि नान्हे कर अपने, मैं कैसे करि पायो।।
मुख दधि पोंछि कहत नंदनंदन, दोना पीठ दुरायो।
डारि साँट मुसुकाई तबहि, गहि सुत को कंठ लगायो।।
बालविनोद मोद मन मोह्यो, भक्ति प्रताप दिखायो।
सूरदास प्रभु जसुमति के सुख, शिव विरँचि बौरायो।।1॥

मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहि दूध पिअत भई, यह अजहूँ है छोटी।।
तू जो कहति बल की बेनी, ज्यौं, ह्वै है लाँबी मोटी।
काढ़त गुहत न्हवावत ओछत, नागिनि सी भुइँ लोटी।।
काचो दूध पिआवत पचि-पचि, देत न माखन रोटी।
सूर श्याम चिरजीवौ दोऊ भैया, हरि हलधर की जोटी।।2 ॥

मैया, मोहिं दाऊ बहुत खिझायो।
मोसों कहत मोल को लीनो, तोहि जसुमति कब जायो।।
कहा कहौं यहि रिसके मारे, खेलन हौं नहिं जात।
पुनि पुनि कहत कौन है माता, को है तुमरो तात।।
गोरे नंद जसोदा गोरी, तुम कत स्याम सरीर।
चुटकी दै दै हँसत ग्वाल सब, सिखै देत बलबीर।।
तू मोही को मारन सीखी, दाऊ कबहुँ न खीझै।
मोहन को मुख रिस समेत लखि, जसुमति सुनि-सुनि रीझै।।
सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई, जनमत ही को धूत।
सूर श्याम मो गोधन की सौं, हौं माता तू- पूत।।3 ॥

मो देखत जसुमति तेरे ढोटा, अबहिं माटी खाई।
यह सुनिकै रिस करि उठि धाई, बांह पकरि लै आई।।
इन कर सों भज गहि गाढ़े, करि इक कर लीने सांटी।
मारति हौं तोहिं अबहिं कन्हैया, वेग न उगिलौ माटी।।
ब्रज लरिका सब तेरे आगे, झूठी कहत बनाई।
मेरे कहे नहीं तू मानति, दिखरावौं मुख बाई।।4॥

– *सूरदास*

भाई-बहन

तू चिनगारी बनकर उड़ री, जाग-जाग मैं ज्वाल बनूँ,
तू बन जा हहराती गंगा, मैं झेलम बेहाल बनूँ;
आज बसन्ती चोला तेरा, मैं भी सज लूँ लाल बनूँ;
तू भगिनी बन क्रान्ति कराली, मैं भाई विकराल बनूँ;
यहाँ न कोई राधारानी, वृन्दावन, वंशीवाला;
तू आँगन की ज्योति बहन री, मैं घर का पहरे वाला।

बहन प्रेम का पुतला हूँ मैं, तू ममता की गोद बनी;
मेरा जीवन क्रीड़ा-कौतुक तू प्रत्यक्ष प्रमोद भरी;
मैं भाई फूलों में भूला, मेरी बहन विनोद बनी;
भाई की गति, मति भगिनी की दोनों मंगल-मोद बनी
यह अपराध कलंक सुशीले, सारे फूल जला देना।
जननी की जंजीर बज रही, चल तबियत बहला देना।

भाई एक लहर बन आया, बहन नदी की धारा है;
संगम है, गंगा उमड़ी है, डूबा कूल-किनारा है;
यह उन्माद, बहन को अपना भाई एक सहारा है;
यह अलमस्ती, एक बहन ही भाई का ध्रुवतारा है;
पागल घड़ी, बहन-भाई है, वह आजाद तराना है।
मुसीबतों से बलिदानों से पत्थर को समझाना है।

- गोपालसिंह 'नेपाली'

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. कृष्ण ने दही का दोना कहाँ छिपा लिया ?
2. दूध पीने से चोटी बढ़ती है, यह सुझाव कृष्ण को किसने दिया था?
3. सूरदास किस भाषा के कवि है ?

4. 'मोसों कहत मोल को लीनो' यह कथन किसने कहा है?

5. ''घर का पहरे वाला'' से कवि का क्या आशय है?

6. 'ममता की गोद' किसे कहा गया है?

लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. अपने को निर्दोष सिद्ध करने के लिए कृष्ण ने यशोदा को क्या-क्या तर्क दिए?

2. 'गोरे नंद जसोदा गोरी, तुम कत स्याम सरीर' यह पंक्ति किसने, किससे और क्यों कही?

3. मुँह से मिट्टी निकालने के लिए यशोदा ने कौन-सा उपाय किया?

4. 'मेरा जीवन क्रीड़ा-कौतुक तू प्रत्यक्ष प्रमोद भरी' से कवि का क्या आशय है?

5. बहन को भाई का 'ध्रुव तारा' क्यों कहा गया है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कृष्ण माता यशोदा से बलदाऊ की क्या-क्या शिकायतें करते हैं?

2. 'सूर वात्सल्य के चितेरे हैं', इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

3. बहन को 'चिनगारी' तथा भाई को 'ज्वाला' बताने के पीछे कवि का क्या आशय है?

4. कवि ने भाई-बहन के स्नेह को किन-किन प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है?

5. 'भाई-बहन' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

6. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए -

(अ) मैया मैं नाहीं..... शिव विरंचि बौरायो।।

(ब) मैया कबहिं बढ़ैगी..... हरि हलधर की जोटी।।

(स) भाई एक लहर..... भाई का ध्रुव तारा है।

काव्य सौन्दर्य -

1. निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप लिखिए-

किती, दोऊ , जायो, सिखै, सौं, हौं, लरिका, काचो

2. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार पहचान कर लिखिए-

(अ) काढ़त गुहत न्हवावत ओछत, नागिन सी भुईं लोटी।

(ब) मेरा जीवन क्रीड़ा-कौतुक तू प्रत्यक्ष प्रमोद भरी।

(स) काचो दूध पिआवत पचि-पचि, देत न माखन रोटी।

3. **निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम और तद्भव शब्द छाँटकर लिखिए-**

ज्योति, उन्माद, बहन, कलंक, जननी, माटी, मैया, पूत, तात, पत्थर

ध्यान दीजिए :-

''मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहि दूध पिअत भई, यह अजहूँ है छोटी।।

तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं, ह्वै है लाँबी मोटी।
काढ़त गुहत न्हवावत ओछत, नागिनि-सी भुइँ लोटी।।''

इन काव्य पंक्तियों को पढ़कर बालसुलभ क्रीड़ाएँ तथा वात्सल्य भाव की अनुभूति होती है।

जिन पंक्तियों को पढ़कर मन में ममता के भाव, वात्सल्य के भाव आएँ वहाँ वात्सल्य रस होता है। इसका स्थायी भाव वत्सल है।

इन पंक्तियों में आलम्बन विभाव कृष्ण हैं तथा कृष्ण की बाल-लीलाएँ व बाल-चेष्टाएँ उद्दीपन विभाव है।

और भी समझिए-

सहृदय के हृदय में विभाव, अनुभाव और संचारी भावों से पुष्ट हुआ 'रति' स्थायी भाव जब अपनी परिपक्वता को प्राप्त कर लेता है तब शृंगार रस की उत्पत्ति होती है। इसे 'रसराज' भी कहा जाता है। इसके दो भेद हैं- संयोग शृंगार और वियोग शृंगार।

उनका यह कुंज-कुटीर, वहीं झरना उडु, अंश अबीर जहाँ,
अलि कोकिल, कीर शिखी सब हैं, सुन चातक की रट पीव कहाँ?
अब भी सब साज-समान वही, तब भी सब आज अनाथ यहाँ,
सखि जा पहुँचे सुधि-संग वही, यह अंध सुगंध समीर वहाँ।

इस पद में -

स्थायी भाव – रति

विभाव क – आलंबन – यशोधरा (आश्रय) सिद्धार्थ (विषय)

ख – उद्दीपन – कुंज-कुटीर, कोकिल, भौंरे व पपीहे की ध्वनि

अनुभाव - विषाद भरे स्वर में कथन

संचारी भाव - स्मृति, मोह, विषाद

4. गोद राखि चचुकारि दुलारति पुन पालति हलरावति।
आँचर ढाँकि बदन विधु सुंदर थन पय पान करावति।।

उपर्युक्त पंक्तियों में प्रयुक्त रस बताइए।

5. इस पाठ में से पुनरुक्ति प्रकाश और अनुप्रास अलंकार के उदाहरण छाँटकर लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. वात्सल्य रस से संबंधित अन्य कवियों की रचनाएँ पढ़िए एवं सूर के वात्सल्य वर्णन से उनकी तुलना कीजिए।
2. 'रक्षाबंधन' त्योहार के परिप्रेक्ष्य में 'भाई-बहन' कविता का महत्व बताइए।
3. किसी क्षेत्रीय बोली में 'भाई-बहन' के स्नेह पर आधारित लोकगीतों को कंठस्थ कीजिए एवं बालसभा में उनका गायन कीजिए।

शब्दार्थ

सूर के बालकृष्ण

ख्यालपरे = याद आया
भाजन = बर्तन, पात्र
बेनी = चोटी
भुइँ = भूमि, जमीन
जायो = पैदा किया
तात = पिता
चबाई = निन्दक, चुगलखोर, झूठा
ढोटा = पुत्र
गहि गाढ़े = जोर से पकड़कर
सांटी = पीटने की डंडी
मुख बाई = मुख फैलाकर,

भाई-बहन

हहराती गंगा = कलकल ध्वनि करती गंगा
चोला = वेश
भगिनी = बहन
विकराल = भयानक
विनोद = मनोरंजन
तराना = ताल स्वर
प्रमोद = आनंद

❋ ❋ ❋